**सतीश चन्द्र मिश्र**

# चोकी पत्ती

चोकी पत्ती,
तुझे याद है न,
जब पाती लिखी थी,
तू ने डाक से भेजी थी!

वह अंतर्देशीय पत्र,
आज भी धरा है,
चूमता हूं उसे,
ढूंढ़ता हूं तुझे!

कभी हंसी आती थी,
तेरा चो की पत्ती लिखना,
डांटकर प्यार पिलाना,
हंसकर बातें बताना!

फाटता है, फटता नहीं,
यह दिल बहुत मजबूत है,
यादें तेरी आतीं सदा,
तू कभी आती नहीं है!

अब चो की पत्ती,
प्यार के कुछ शब्द,
लिखकर कौन मांगेगा,
अधिकार अपना!!

# तेरा जाना

तेरा जाना,
बंद हो गया,
फूलों का,
मुस्काना!

मेरे लिए क्या है,
बसंत की अंगड़ाई,
पतझड़ की रुसवाई,
सावन की पुरवाई!

मेरे लिए तो सदा,
पतझड़ ही पतझड़,
खुली तेज धूप,
अंधड़ ही अंधड़!

तेरा जाना,
अब फूल नहीं खिलेंगे,
अब भौंरे नहीं गाएंगे,
अब बसंत नहीं आएंगे!

आ लौट आ फिर से,
तुझे पुकारती है मेरी आत्मा,
तुझे पुकारती हैं ए नदियां,
तुझे पुकारती हैं ए वादियां!

अब तो मैं मरकर,
ढो रहा हूं पार्थिव,
शरीर अपना,
तेरा जाना,
तेरी याद आना,
मेरा सब कुछ,
भुला जाना!!

**ग्राम+ पोस्ट= कोबरा, जिला - चित्रकूट,**
**उत्तर- प्रदेश, पिन - 210208.**